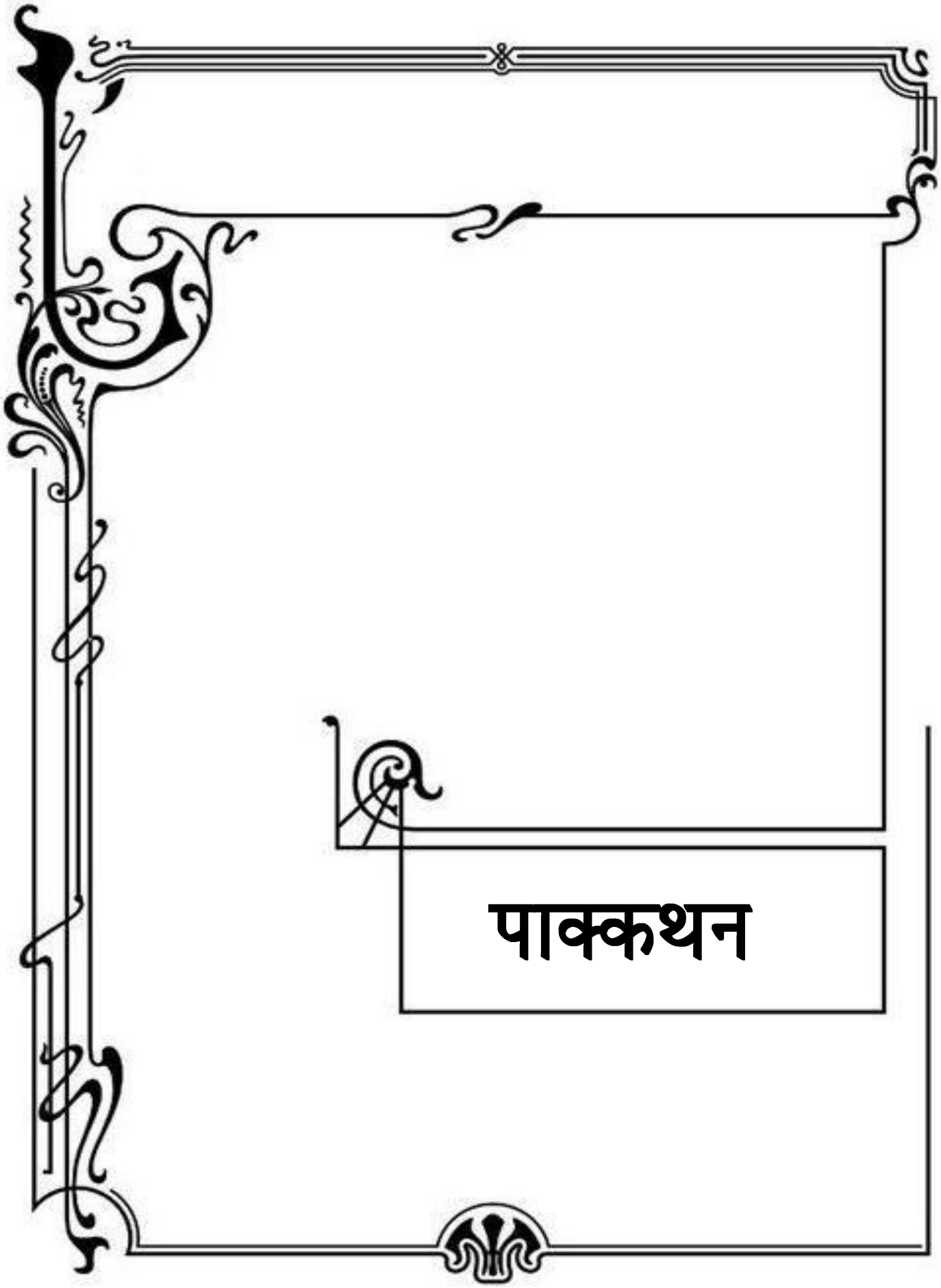

पाक्कथन

पाक्कथन

लखन हमेशा उद्देश्य के साथ लिखा जाता है। दलित साहित्य को समृद्ध और सशक्त बनाना ही मेरा मकसद रहा है। दलित साहित्य का उद्‌भव मूल रूप से मराठी भाषा से हुआ है। मराठी मेरी मातृभाषा है। हिन्दी में मैंने एम. ए. किया है। इसलिए हिन्दी और मराठी में रचित दलित कथा साहित्य पर शोध करना मेरे लिए अति पसन्नता पूर्ण रहा। यह शोधपबंध मेरी तीव इच्छाशक्ति और लगन का परिणाम है। दलित साहित्य आज छोटे से पौधे स विशाल पेड के रूप में विकसित हो रहा है। इसकी चमकदार शाखा रूपी विधाओं की ओर लोग आकर्षित हो इसी हेतु मैंने इस विषय को चुना।

सन 2006 में महाराजा सयाजीराव विश्व विद्यालय के हिन्दी विभाग से मैंने एम. ए. उपाधि पथम श्रेणी में आकर उतीर्ण की तदुंपरात जीविका को ध्यान में रखते हुए बी. एड कर लेना उचित समझा। अत: सन 2008 में मैंने इसी विश्व विद्यालय से बी. एड की उपाधि को मेथड हिन्दी से संपाप्त किया। इतनी व्यावहारिकता को साध लेने के उपरांत मैंने पी-एच. डी के उपाधि हेतु शोध कार्य करने का निर्णय लिया। पंजीकरण पूर्व परमार सर ने मुझे कुछ शोध पबंधों को देख जाने का परामर्श दिया। हंसा मेहता लाइबरी में जाकर मैंने हिन्दी के कुछ पकाशित लब्ध पतिष्ठित शोध पबंधों को जाँचने-परखने का उपकम किया। उसके उपरांत उन शोध-गथों को ध्यान में रखते हुए उन्होंने मुझे शोध विधि और शोध-पकिया के कुछ महती तत्वों स अवगत कराया। "नामूलमलिख्यते" के सिद्धान्त को समझाया। संदर्भ संकेत या पाद टिप्पणी को लेने की पद्धति को समझाया। शोध पबंध में "उपसंहार" और "गंथानुकमणिका" की उपादेयता को बताया। अंतत: "हिन्दी और मराठी दलित कथा साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन" विषय को लेकर मेरा नामांकन दि. 29-8-2009 को संपन्न हुआ। कहते हैं जहाँ अनेक मुसीबतें होती हैं, वहाँ उन्हीं मुसीबतों से रास्ते भी निकल आते हैं। पंजीकरण के बाद मेरा रास्ता संघर्षपूर्ण रहा। इस दौराण में कभी हार जाती तो कभी आत्मविश्वास

से भर जाती क्योंकि जानती थी कि परिश्रम का फल मिठा होता है। 2013 में मैंने स्टेट लेवल एलीजीबीलिटी टेस्ट पास किया। तथा 2015 में मैंने कोर्ष-वर्क संपन्न किया।

वैसे तो दोनों ही भाषाओं का दलित साहित्य आज बहुत समृद्ध हो रहा है। दोनों ही भाषाओं में विपुल मात्रा में साहित्य का लेखन हो रहा है। हिन्दी दलित साहित्य के साथ मराठी दलित साहित्य की तुलना करने से नये तथ्य उजागर हुए हैं। इस विषय के चयन से हिन्दी जगत् को लाभ ही होगा ऐसा हमारा विश्वास है।

शोध पबंध के सुचारु संगठन हेतु मैंने उसे निम्नलिखित सात अध्यायों में विभक्त किया है।

1. पथम अध्याय : विषय पवेश
2. द्वितीय अध्याय : हिन्दी और मराठी दलित कथा साहित्य की पृष्ठभूमि
3. तृतीय अध्याय : *हिन्दी और मराठी दलित कहानी साहित्य*
4. चतुर्थ अध्याय : हिन्दी-मराठी दलित उपन्यास *साहित्य*
5. पंचम अध्याय : (अ)दलित कहानियों के परिपक्ष्य में हिन्दी-मराठी दलित कथा साहित्य की तुलना
   (ब) दलित उपन्यास के परिपक्ष्य में हिन्दी-मराठी दलित कथा साहित्य की तुलना
6. षष्टम अध्याय: (अ)हिन्दी-मराठी दलित कहानी साहित्य में निरूपित समस्याएं
   (ब) हिन्दी-मराठी दलित उपन्यास साहित्य में निरूपित समस्याएं
7. अध्याय सप्तम: हिन्दी - मराठी दलित कथा साहित्य : शिल्प एवं भाषाशैली
8. उपसंहार

पथम अध्याय विषय पवेश है। आज दलित शब्द व्यापक और विस्कृत बना है साथ ही दलित साहित्य का स्वरूप भी बदला है। नये विचारों और कान्ति के साथ दर्द और उत्पीडन की सृष्टि हुई है। अबल को सबल बनानेवाला, मूक को वाणी देनेवाला, मानवता को पूकारने वाला साहित्य ही दलित साहित्य है। दलित साहित्यकारों द्वारा ही मानवता की खोज हुई है। इसलिए यह साहित्य परणा का साहित्य है। दलित साहित्य बहुचर्चित है तथा चर्चा का विषय बना हुआ है। इसी बात को ध्यान में रखते हुए इस अध्याय में हमने दलित का अर्थ, दलित साहित्य के तात्पर्य, दलित साहित्य की भूमिका, तुलनात्मक अध्ययन की उपादेयता, बिटीश राज तथा स्वाधीनता के उपरांत दलितों को पाप्त विशेष अधिकार, नवजागरण के समाज सुधारकों का योगदान, दलित जातियों का वर्गीकरण, तथा

दलितों जातियों पर थोपी गई विभिन्न पकार की निर्योग्यताएँ आदि बिंदुआं पर सविस्तार चर्चा की है।

द्वितीय अध्याय हिन्दी तथा मराठी दलित साहित्य की पृष्ठभूमि है। अपनी बोली में रचनाओं के निर्माण द्वारा कबीर, रैदास, नामदेव, चोखा, ज्ञानदेव जैसे संतो ने जातिपथा का विरोध किया है। महात्मा फूले और आम्बेडकर जैसे समाज सुधारकों ने जाति पथा पर करारा व्यंग किया है। शोषितों के अधिकारों की रक्षा के लिए कठिन संघर्ष किया है। उन्हीं के पयत्नों का परिणाम है कि आज दलित समाज शिक्षा के महत्व को समझा है। दलित संगठन बनाकर भाग्य का स्वयं निर्माण कर रहे हैं। भेद-भाव रहित समाज का निर्माण करने वाला तथा आंबेडकरी विचारों से पभावित यह साहित्य नये युग को परणा देता है। पस्तुत अध्याय में हमने हिन्दी दलित साहित्य की आदिकालीन पृष्ठभूमि में आदिकाल–सिद्धसाहित्य–नाथसाहित्य, तथा भक्तिकालीन निर्गुण संत कवियों का योगदान, मराठी साहित्य में दलित साहित्य की पृष्ठभूमि, नामदेव–ज्ञानदेव आदि का यागदान, मराठी दलित साहित्य में भक्तिकालीन संत कवियों का योगदान पस्तुत किया गया है।

तृत्तीय अध्याय में हिन्दी–मराठी दलित कथा साहित्य को कहानी के परिपक्ष्य में पस्तुत किया गया है। पस्तुत अध्याय में हिन्दी दलित कहानी साहित्य पर चर्चा करते हुए हिन्दी दलित कहानीकारों की पमुख रचनाओं पर दृष्टिपात किया गया है। हिन्दी दलित कहानियों में ज्यादातर घटना पधान विषय ही उभरकर आते हं। दलित साहित्य में हकीकत को ज्यादा महत्व दिया जाता है। हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में अनेक दलित कहानोकारों ने अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया हैं। जिसमें मोहनदास नैमिशराय, ओमपकाश वाल्मीकि, सूरजपाल चौहान, जयपकाश कर्दम, डॉ. कुसुम वियोग, डॉ. दयानंद बटौही, बीपिन बिहारी आदि कहानीकारों का समावेश किया गया है। इस अध्याय में आगे मराठी दलित कहानीकारों का परिचय पाप्त करके उनकी पमुख कहानियों का अध्ययन किया गया है। मराठी दलित कहानी साहित्य में पसिद्ध मराठी दलित कहानीकार बाबुराव बागुल, अन्नाभाउ साठे, शंकरराव खरात, शरणकुमार लिम्बाले, केशव मेश्राम, बंधु माधव, दया पवार, गोपाल राडगांवकर, योगीराज वाघमारे, आदि लेखकों की कहानी लेखन पर दृष्टिपात किया है। आधुनिक काल में दलित साहित्य में कहानी विधा पबलता से सशक्त बनती जा रही है। दलित कहानी अपना सांस्कृतिक दु:ख का पदर्शन नहीं कर रही है बल्कि इसका दर्शन कराती है। बहुत से विचारकों का कहना है कि डॉ. बाबासाहब आम्बेडकर जी को मुक्ति संगाम ने ही दलित कहानी को जन्म दिया है।

इसकी सहायता से आज सारी भारतीय भाषा के दलित साहित्यकार सीना तान आगे बढकर कहानी लिखने में रूची ले रहे हैं। इस अध्याय में हमने उपर्युक्त साहित्यकारों की कहानियों का विश्लेशषण करने का यत्न किया है।

चतुर्थ अध्याय में हिन्दी–मराठी दलित कथा साहित्य उपन्यास के परिपक्ष्य में है। पस्तुत अध्याय में हिन्दी दलित उपन्यासकारां और उनके उपन्यासों का विवेचन किया गया है। जिसमें मोहनदास नैमिशराय का 'मुक्तिपर्व', जयपकाश कर्दम का 'करुणा' तथा 'छप्पर', रूपनारायण सोनकर का 'सूअरदान', सत्य पकाश का 'जस तस भई सवेर', तथा पम कपाडिया का 'मिट्टी की सौगंध' अदि का समावेश किया गया है।इस अध्याय के उत्तरार्द्ध में मराठी दलित उपन्यासकार और उनके पमुख उपन्यासों पर चर्चा की गयी हैं। जिसमें, अन्नाभाउ साठे का 'फकिरा', शंकरराव खरात का 'हाथभट्टी', केशव मेश्राम का 'हकोकत व जटायु', नामदेव ढसाळ का 'हाडकी हाडवडा', और शरणकुमार लिम्बाले का 'उपल्या' तथा 'भिन्नलिंगी' का समावेश किया गया है। इन उपन्यासों में मानवता, मानव कल्याण, मानव हित की ही बात की गई है। उपन्यास समाज का दर्पण है, जिसमें अलग–अलग स्तर पर जीने वाले लोगों का जीवन तथा समाज का चित्रण हुआ है। जिसके केंद में मानव हं। सभो सजग दलित साहित्यकारों ने समकालोन परिस्थितियों आकांक्षाओं जन जीवन की स्थितियों का बखूबी वर्णन किया है।

पंचम अध्याय में हिन्दी और मराठी दलित कथा साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। पस्तुत अध्याय के अंर्तगत हिन्दी और मराठी दलित कहानियों की तुलना विषयवस्तु, भाषाशैली, युगबोध निरूपण, विचारधारा आदि बिंदुओं को ध्यान में रखकर की गयी है। तथा उसीके उत्तराद्ध में, हिन्दी और मराठी दलित उपन्यासों की तुलना विषयवस्तु, भाषाशैली, युगबोध निरूपण, विचारधारा इत्यादि बिंदुओं को ध्यान में रखकर की गयी है। तुलनात्मक अध्ययन का मूल हेतु तुलना करना है और साथ ही ज्ञान का विस्तार करना है। यह साहित्य दो विधाओं को जानने का साधन है, जिससे उसकी विशिष्टताएँ उजागर हो सके। केवल पीडा की अभिव्यक्ति पाठकों को लम्बे समय तक बांधे नहीं रख सकती। पीडा के आगे भी सकारात्मक सोच होनी चाहिए। इसलिए लखक की निरूपण शैली, भाषाशैली, विचारधारा को व्यक्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभातो है। इस दृष्टि से इस अध्याय में हिन्दी और मराठी दलित साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन करने का उपकम है।

षष्ठ अध्याय में हिन्दी और मराठी दलित कथा साहित्य में निरूपित समस्याओं के संदर्भ में तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। जिसमें सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, धार्मिक, शैक्षिक आदि समस्याओं के संबंध में चर्चा की गयी है। हिंदी और मराठी दलित कथा साहित्य में केवल दलित समाज जीवन को पर्तो को ही नहीं खोला गया बल्कि उनकी सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, धार्मिक, शक्षिक आदि समस्याओं पर भी पकाश डालने का पयास किया गया है। आज का समाज जीवन कई समस्याओं से घिरा हुआ है। ऐसी हालत में साहित्यकारों का दायित्व बनता है कि वे इन समस्याओं को उजागर करें। इस दृष्टि से इन उपन्यासों में नारी की स्थिति, दलितों की दशा, राजनीतिक व्यथा, लोकतंत्र का मतलबी अर्थ, विकास के नाम पर भष्टाचार, आजादी का झूठा नारा, गावों की दयनीय हालत, धार्मिक आडंबर, आदि का उदाहरण सहित उल्लेख किया गया है।

सप्तम अध्याय में हिन्दी और मराठी दलित कथा साहित्य शिल्प सौष्ठव एवं भाषाशैली विषयक चर्चा की गयी है। पस्तुत अध्याय के पठन से भारतीय हिन्दो और मराठी दलित साहित्य का संपूर्ण चित्र हमारे सामने आता है। दलित साहित्य का सौंदर्यशास्त्र, दलित साहित्य का शिल्प एवं भाषाशैली, दलित साहित्य पर लगाये गए आरोप आदि बिदुंओं का विश्लेषण किया गया है। दलित साहित्य का सौदर्य शास्त्र हिंदी साहित्य में चर्चा का विषय है। दलित साहित्य में विदोह, चीख और संघर्ष ही सुंदरता है। इसीलिए इसका सौदर्यशास्त्र भिन्न है। परंपरा से हटकर है। यह अनुभवलक्षी साहित्य होने के कारण इस पर बनावटी सौदर्य का नकाब नहीं ओढाया गया है। इन साहित्यकारों की भाषा मौलिकता तथा स्वानुभव से जुडी हुई है। दलित स्वहित में लिखा हुआ साहित्य है। दलित साहित्य पर कइ आरोप लगे चाहे वह भाषा का लेकर हो या नकार परंतु इस नकार के पीछे स्वस्थ समाज निर्माण की भावना है। इस नकार और निषेध को सकारात्मक रूप में लेना चाहिए। इसी पयत्न हेतु हमने इन सभी मुद्दो की चर्चा पस्तुत अध्याय में की है।

अंत में उपसंहार के रूप में उपयुक्त सातों अध्यायों का संक्षिप्त-सार पस्तुत किया है और भविष्य की संभावनाओं को उजागर करते हुए इस अध्ययन की उपलब्धियों पर पकाश डाला है। सामाजिक कांति तब होगी जब समाज की मानसिकता बदलेगी। मानसिकता बदलेगी तो समता की स्थापना होगी। इसी उद्दश्य को लेकर हमने इस शोध-पबंध की संकल्पना की है। इस संकल्पना को साकार करने के लिए हमने पस्तुत पबन्ध में शोध-पकिया और पविधि के नियमों का यथासंभव पालन किया है। कम-से-कम एक वर्ष तक मैंने अपने विषय से सम्बन्धित साहित्य की सामगो का

संचयन, अध्ययन और अनुशीलन किया। उसके पश्चात् विभिन्न अध्यायों से संलग्नित विषय सामगो का वैज्ञानिक ढंग से वर्गीकरण किया। मैंने संदर्भ संकेत और पाद्-टिप्पणियों के निर्देशक के लिए अध्याय के अन्त में कमशः सूचि पस्तुत की है। पुस्तक, गंथ या पत्रिका का नाम, लेखक का नाम और पृष्ठ संख्या के अन्त में अध्याय समगावलोकन की पकिया द्वारा उस अध्याय में निहीत मुद्दों से कतिपय निष्कर्ष निकालने का पयत्न किया है। शोध-सिद्धांत के मूल-मंत्र-नामूलम् लिख्यते का पालन किया है और अपने मुद्दों की पस्तुति पमाण सहित की है। अध्याय के अन्त में वैज्ञानिक और सुनियोजित ढंग से गंथानुकमणिका को अकारादि कम से पस्तुत किया है।

महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय कलासंकाय के पाध्यापकों में अपनी अलग पहचान रखनेवाले पाध्यापक डा. एन. एस. परमार जो मेरे मार्गदर्शक है जिन्होंने सदैव व्यस्त रहने के बावजूद स्नेहपूर्ण आशीर्वाद के साथ मुझे मार्गदर्शन दिया। शोध विषय के चयन से लेकर शोधगंथ के पूर्ण होने तक उन्होंने मेरा पथ पदर्शन किया। आप दलित साहित्य में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं और आगे भी देते रहेंगे। दलित साहित्य पर काम कर रहे विद्यार्थीओं के लिए आप हमेशा तत्पर रहे है और मने आप से हमेशा परोपकार की ही परणा गहण की है। आपने जिस उत्साह और विश्वास के साथ मेरा मार्गदर्शन किया उसके लिए मैं आपकी ऋणी हूँ। यह ऋण चुकाना असंभव है। साथ ही मैं उन तमाम विद्वानों के पति अपनी कृतज्ञता व्यक्त करती हूँ, जिन्होंने मुझे कहीं-न-कहीं किसी-न-किसी रूप में मागंदर्शन पदान किया है। हंसा मेहता लायबरी, सेन्ट्रल लायबरी, बडौदा, हिन्दी विभागीय लायबरी, भाइकाका लायबरी वल्लभ विद्यानगर, पुस्तकालय ज्ञान का असीम सागर है। विद्याघरों के बिना मेरा यह शोध गंथ अधूरा रह जाता। अतः उन तमाम पुस्तकालयों का आभार मानती हूँ, जिनका मुझे सहयोग मिला है। हिन्दी विभागों के गुरूजन जिन्होंने मुझे पढाया है। मेरी यहा तक की मंजिल को पाप्त करने में उनका योगदान रहा है।इस अवसर पर मैं उन तमाम का आभार मानती हूँ। हिन्दी विभाग के पूर्व अध्यक्ष एवं पोफेसर पारूकान्त देसाई एवं डॉ.अनुराधा दलाल का मैं आभार मानती हूँ। कला संकाय के डीन पोफेसर पदीपसिंह चुंडावत का मैं आभार मानती हूँ जिन्होंने मुझे समय-समय पर मार्गदर्शन दिया। म. स. विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग की अध्यक्षा पो. दक्षा मिस्त्री तथा विभाग के अन्य वरिष्ठ पाध्यापक डॉ.ओ.पी.यादव, डॉ.के.वी.निनामा, डॉ. शैलजा भारद्वाज, डॉ.कल्पना गवली, डॉ.शन्नो पाण्डेय, डॉ. दोपेन्दसिंह

जाडेजा, डॉ. मनोषा ठक्कर, डॉ. एम.पी.पाण्डेय तथा मराठी विभाग के डॉ. संजय करंदीकर आदि से भी मुझे पत्यक्ष या परोक्ष रूप से सहायता एवं मार्गदर्शन समय समय पर मिलता रहा है। अत: मै उनके पति भी अपनी विनमता पकट करती हूँ। मेरी स्वर्गीय माताजी अगर जीवित होती तो बहुत खुश होती, उनके आत्मिक बल के बिना मेरा यह कार्य अधूरा रह जाता। उनका ऋण चुकाना मेरे लिए मुश्किल है। मेरी नणंद डॉ. योगिता देशमुख तथा मेरे भाई नीतिन बावीस्कर का मैं आभार मानती हूँ जिन्होंने मुझे यह कार्य संपन्न करने हेतु पोत्साहित किया। तथा मेरे पति चिराग देशमुख और बेटी द्वीति का सहकार मिला है। उन्हं इस अवसर में मैं कैसे भुला सकती हूँ।

अंत में पत्यक्ष या परोक्ष रूप से मुझे जिन्होंने मदद की है उनके पति मैं कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ। आगे मैं अपने परिवारजनों को भी धन्यवाद देना चाहूंगी जिनके साथ और सहकार के बिना यह कार्य असंभव था। तथा अंत में पसाद जी की पक्तियों को उदृत करना चाहती हूँ,

इस जीवन पथ का ध्येय नहीं, शृंत भवन में टिक रहना।
किन्तू पहुँचना है उस सीमा तक जिसके आगे राह नहीं।।

धन्यवाद

(**वनमाला बावीस्कर**)